प्रकाशन तिथि : 01 अगस्त, 2021
प्रेषण तिथि : 04 अगस्त, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

# पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 10 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

## मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर कार्यवाही की मांग

विगत 25 जुलाई को राजस्थान व दिल्ली की सीमा पर आंदोलनरत कथित किसानों द्वारा राजस्थान सैनिक कल्याण बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष एवं पूर्व विधायक प्रेमसिंह बाजौर के साथ मारपीट की गई एवं उनकी गाड़ी को तोड़ा गया। इस घटना को लेकर श्री प्रताप फाउंडेशन द्वारा राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर इस प्रकार की घटनाओं को स्वस्थ समाज के लिए कलंक बताया गया एवं किसानों के नाम पर हो रही ऐसी गुंडागर्दी के खिलाफ कड़ी कार्यवाही करने की मांग की गई। समाज के विभिन्न संगठनों ने इस बाबत ज्ञापन आदि देकर अपना विरोध जताया है।

## सेवा का सम्यक स्वरूप है आज्ञापालन

आलोक आश्रम, बाड़मेर

गुरु का महत्व आदिकाल से रहा है। भगवान राम ने वशिष्ठ मुनि को गुरु स्वीकार किया और जीवनभर उनकी आज्ञा का पालन किया। मैं भी जब स्वामी अड़गड़ानंद जी के पास गया तो उन्होंनें कहा कि सेवा करो। मैने निवेदन किया कि मैं भौतिक रूप से कैसे सेवा कर पाऊंगा, तब उन्होंने कहा कि भौतिक सेवा तो सेवा का स्थूल स्वरूप है। वास्तव में तो आज्ञापालन ही सेवा है। अर्जुन युद्ध के लिए उत्साहित थे लेकिन भगवान श्री कृष्ण युद्ध को टालने का पूरा प्रयास कर रहे थे। जब युद्ध अवश्यंभावी हो गया तो युद्ध के मैदान में अर्जुन तर्क करने लगे। अंत में 18 वें अध्याय में स्वयं को वास्तव में शिष्य स्वीकार किया और भगवान की आज्ञा का पालन करने की बात कही। इस प्रकार गुरु की वास्तविक सेवा गुरू की आज्ञा का पालन करना है। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर आलोक आश्रम में आये स्वयंसेवकों से संवाद करते हुए श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक एवं मार्गदर्शक माननीय भगवानसिंह रोलसाहबसर ने उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि गुरु कोई व्यक्ति नहीं होता बल्कि तत्व होता है जो हम सबके अंतर में स्थित है। हमें यह विश्वास करना पड़ेगा कि वे हमारे साथ हैं और हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं। वे हम सबको आज्ञा दे रहे हैं, हम उस आज्ञा को सुन पाते हैं या नहीं यह हमारी क्षमता पर निर्भर करता है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

## केन्द्रीय मंत्रियों से मिला प्रतिनिधिमंडल

आर्थिक आधार पर आरक्षण की विसंगतियों को लेकर श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के प्रतिनिधिमंडल ने 20 जुलाई को केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत से भेंट कर उन्हें राजस्थान में विगत सत्र में बने प्रमाण पत्रों के आंकड़े पेश किए। माननीय मंत्री महोदय को बताया गया कि राजस्थान सरकार द्वारा अव्यवहारिक शर्तों को हटाने के बाद विगत सत्र में राज्य सरकार के नियमों के अनुरुप कुल 142360 प्रमाण पत्र बने जबकि केन्द्रीय सेवाओं व शिक्षा संस्थानों के लिए केन्द्र सरकार के नियमों के अनुरूप केवल 56440 प्रमाण पत्र ही बने हैं। इस प्रकार दोनों तरह के प्रमाण पत्रों का अनुपात लगभग 70:30 है। इन आंकड़ों में से यदि अलवर जैसे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के जिले को अलग कर दिया जाए तो यह अनुपात लगभग 80:20 हो जाता है और कुछ जिलों में तो यह 90:10 ही है। इतनी बड़ी विसंगति का परिणाम यह है कि जिस अनारक्षित वर्ग के लिए यह आरक्षण लागू किया गया था उसका अधिकांश भाग तो इसमें शामिल ही नहीं हो पा रहा है और ऐसे लोगों के लिए इस आरक्षण से पहले जहाँ 51% अवसर

उपलब्ध थे वे अब घटकर 41% रह गये हैं। साथ ही परिवार की अव्यवहारिक परिभाषा के कारण होने वाली प्रक्रियागत परेशानी व विशेष रूप से महिलाओं को होने वाली परेशानी को लेकर भी अनुरोध किया गया।

माननीय मंत्री महोदय ने प्रतिनिधिमंडल की बात को ध्यान से सुना, आंकड़ों का विश्लेषण किया एवं केन्द्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डा. वीरेंद्र कुमार से संपर्क कर प्रतिनिधिमंडल के साथ उनसे मिलने पहुंचे। दोनों मंत्रियों ने प्रतिनिधिमंडल के सामने ही इस विषय पर विस्तार से चर्चा की। माननीय गजेन्द्रसिंह जी ने अपने साथी मंत्री को पूरा विषय विस्तार से समझाया। उन्हें राजस्थान के संदर्भ में अनुपजाऊ कृषि जोतों के आकार, पशु पालन व्यवसाय के कारण बड़े आवासीय भूखंड आदि के कारण प्रमाण पत्र नहीं बन पाने की स्थिति से अवगत करवाया। उन्होंने बताया कि राजस्थान, गुजरात सहित अनेक राज्यों ने इसकी शर्तों में संशोधन कर दिए हैं और इस कारण से हर व्यक्ति को दो दो प्रमाण पत्र बनाने पड़ते हैं जिससे समय, धन व ऊर्जा तीनों का अपव्यय होता है। महिलाओं के प्रमाण पत्रों के बनने में आ रही समस्याओं को लेकर चर्चा की गई। इस प्रकार पूरा विषय विस्तार से समझाया गया एवं मंत्री डा. वीरेंद्र कुमार ने गंभीरता से पूरे विषय को समझा। (शेष पृष्ठ 5 पर)

## RPSC में बंदरबाट, पक्ष विपक्ष का उपेक्षापूर्ण रवैया

हाल ही में जारी राजस्थान प्रशासनिक सेवा परीक्षा 2018 के परिणामों में नेताओं के रिश्तेदारों को साक्षात्कार में उनके लिखित के अंकों से दुगुने नंबर देकर लाभ पहुंचाने का मामला बेरोजगार युवाओं, उनके अभिभावकों, पत्रकारों व सामाजिक संगठनों द्वारा उठाया गया। इस मामले में कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष एवं शिक्षामंत्री गोविंद जी डोटासरा पर अपने रिश्तेदारों को अविधिपूर्वक लाभ पहुंचाने के आरोप लगे। लेकिन प्रतिपक्षी राजनीतिक पार्टी भारतीय जनता पार्टी के एक दो प्रदेश स्तरीय एवं कुछ स्थानीय नेताओं के अतिरिक्त शेष पार्टी नेताओं द्वारा इस विषय को जोर शोर से न उठाना राजनेताओं की जातिवादी मानसिकता का स्पष्ट परिचायक है। प्रदेश से एक केन्द्रीय राज्यमंत्री ने तो अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर इसके खिलाफ पोस्ट डाल कर तुरंत डिलीट कर दी। प्रदेशाध्यक्ष सतीश जी पुनिया का बहुत नरम सा बयान आया जिसमें वे अपनी प्रतिपक्षी पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष का नाम लेकर बयान देने से साफ बचते दिखाई दिए। भाजपा के एक पूर्व सांसद ने तो कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष के पक्ष में बयान तक दे दिया। शेष सांसदों ने औपचारिक बयान तक नहीं दिया। वहीं सत्तारूढ़ पार्टी के प्रदेश प्रभारी ने आम लोगों के इस विरोध को ही भाजपा का षड्यंत्र करार देकर अपने आरोपित प्रदेशाध्यक्ष का बचाव ही नहीं किया बल्कि आम जनता के इस मुद्दे को राजनीतिक रूप देकर उसका अपमान ही किया। उनके इस व्यवहार से क्षुब्ध हो श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी को भी पत्र लिखकर ऐतराज जताया गया। पक्ष और विपक्ष का यह व्यवहार इस बात का द्योतक है कि राजस्थान की राजनीति में एक जाति विशेष का जातिवाद किस कदर हावी है एवं विशेष रूप से भारतीय जनता पार्टी सरकार का विरोध करने में भी जाति के आधार पर मुद्दों का चयन करने लगी है। ऐसे में हमारी जिम्मेदारी बढ़ जाति है कि हम कैसे अपने आपको व संपूर्ण समाज को जातिवाद के इस जहर से बचायें। वास्तव में आज जाति नामक संस्था को जातिवाद से बचाने के लिए विशेष प्रयासों की आवश्यकता है।

# संघ साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ

**पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा रचित 'बदलते दृश्य' पुस्तक के 'बदलते दृश्य' प्रकरण में मेवाड़ से संबंधित 'ऊंटाला विजय' में शक्तावत और चूडांवतों के संदर्भ में :**

महाराणा प्रताप की मृत्यु के बाद महाराणा अमरसिंह वि.सं. 1663 ई. में मेवाड़ के शासक बने, महाराणा अमरसिंह भी अपने पिता महाराणा प्रताप के पद चिह्नों पर चलकर अकबर जैसे साम्राज्यवादी शक्ति के सामने स्वतंत्रता का ध्वज लहराते हुए संघर्षरत रहे। शासक बनते ही उन्होंने मेवाड़ से बचे हुए शाही थानों पर धावे की तैयारी की वहीं अकबर इसे एक अवसर समझ कर सेना सहित मेवाड़ पर चढ़ आया। महाराणा अमरसिंह ने छापामार युद्ध नीति को अपनाया और मुगल सेना पर अचानक आक्रमण करते हुए मुगलसेना को क्षति पहुंचा कर वापिस पहाड़ों में चले जाते, जिससे मुगल सेना परेशान हो चुकी। दक्षिण में विद्रोह हो जाने पर अकबर दक्षिण की ओर चला गया। कुछ समय बाद मेवाड़ी वीरों की छापामार युद्ध नीति से त्रस्त होकर शहजादा सलीम भी आगरा चला गया। शाही सेना के इस समय ऊंटाला, मोही, कोशीथल, बागौर, मांडल, चित्तौड़ में थाने बैठे हुए थे। वि.सं. 1657 में महाराणा अमरसिंह ने शाही थानों पर आक्रमण की तैयारी कर सर्वप्रथम ऊंटाला पर आक्रमण किया। शाही सेना भी मेवाड़ी वीरों का सामना करने मैदान में आई, मेवाड़ी वीरों की वीरता के आगे मुगल सेना रणक्षेत्र में ठहर नहीं पाई। ऊंटाला का शाही अधिकारी कायम खां महाराणा अमरसिंह के हाथों युद्ध क्षेत्र में मारा गया, पराजित शाही सेना भाग कर ऊंटाले के किले में छिप गई। मेवाड़ की सेना हरावल में चूंडावत रहते थे, दाहिनी तरफ झाला तथा सारंगदेवोत, बाई तरफ चौहान, राठौड़ आदि तथा चंदावल में शक्तावत रहते थे। हरावल में रहने के लिए कुछ समय से चूंडावतों और शक्तावतों में वाद-विवाद चल रहा था। ऊंटाला किले पर आक्रमण के समय महाराणा ने कहा कि चूंडावतों और शक्तावतों में से जो पहले किले में प्रवेश करेगा, वही हरावल में रहने का अधिकारी होगा। इस पर चूंडावतों और शक्तावतों ने अपने कुल प्रमुखों के साथ किले पर आक्रमण किया। शक्तावतों के प्रमुख बल्लू जी शक्तावत अपने साथियों के साथ किले के मुख्य द्वार पर आक्रमण के लिए गए तो दूसरी ओर चूंडावत सरदार रावत जैत्रसिंह कृष्णावत अपने साथियों के साथ दीवार की ओर से आक्रमण के लिए गए। बल्लू जी शक्तावत ने किले के मुख्य द्वार पर पहुंच कर अपने हाथी के महावत से कहा कि हाथी से टक्कर दिला कर दरवाजा तोड़ दो, महावत ने कहा कि किवाड़ों पर भाले लगे हुए है इसीलिए हाथी टक्कर मारने से डर रहा है और पीछे हट रहा है। दूसरी ओर चूंडावत जैत्रसिंह सीढ़ी लगाकर दीवार पर चढ़ रहे थे। ये देखकर बल्लू जी शक्तावत किवाड़ के भालों के आगे स्वयं खड़े हो गए और महावत को कहा कि हाथी को हूल दे, महावत हिचकिचाया तो उसे कहा हाथी को हूल दे नहीं तो मेरे हाथों तू मारा जाएगा। ऐसा सुनकर महावत ने हाथी को आगे बढ़ाया, उसी समय चूंडावत जैत्रसिंह सीढ़ी से दीवार पर चढ़ कर परकोटे पर पहुंच रहे थे कि किले के अन्दर से शत्रुओं की ओर से चलाई गई एक गोली उसके सीने में आ लगी। दूसरी ओर हाथी ने बल्लू जी शक्तावत के सीने पर टक्कर मारी और दरवाजा टूटने के कगार पर आ गया, ये देख जैत्रसिंह चूंडावत ने अपने साथियों से कहा कि मेरा मस्तक काटकर शीघ्र किले में फेंक दो। उनके साथियों ने उनकी आज्ञा का पालन करते हुए उनका मस्तक किले में फेंक दिया, दूसरी तरफ हाथी की दूसरी टक्कर बल्लू जी के सीने पर लगते ही दरवाजा टूट गया। चूंडावत वीर दीवार से और शक्तावत वीर दरवाजे से किले में घुस आए, शत्रु सेना मारी गई और किला विजय कर लिया गया। इस युद्ध में मेवाड़ वीरों में से रावत जैत्रसिंह चूंडावत, बल्लूजी शक्तावत, रावत तेजसिंह खंगारोत और उनके मेवाड़ी वीर वीरगति को प्राप्त हुए। चूंडावत जैत्रसिंह का मस्तक किले में पहले पहुंचा, इससे हरावल चूंडावतों की ही रही। कैसी गौरवशाली उज्ज्वल परम्परा थी कि शत्रु सेना का संहार करने का अवसर पहले हमें मिले, मातृभूमि की रक्षार्थ, स्वधर्म पालन करते हुए आततायी शत्रुओं की विशाल सेना से युद्ध करते हुए वीरगति पाने का अवसर हमें मिले, इसीलिए सीने पर हाथी से टक्कर दिलवाई, मस्तक उतारकर किले में फेंक दिया गया।

**संदर्भ ग्रन्थ : (1) वीर विनोद-कविराज श्यामलदास।**

**-खींवसिंह सुल्ताना**

## शाकम्भरी का चाहमान वंश

भारतीय इतिहास में चौहान वंश का विशिष्ट स्थान है जिन्होंने अपने शौर्य, त्याग और कुशल शासन प्रबंध से भारतीय संस्कृति के निर्माण और संरक्षण में विशेष योगदान दिया। 'पृथ्वीराज विजय', 'हम्मीर महाकाव्य', 'हम्मीर रासो' और चौहान शासकों के विभिन्न शिलालेखों से ज्ञात होता है कि ये सूर्यवंशीय क्षत्रिय थे। चौहानों का आविर्भाव जांगल देश में सपादलक्ष को माना जाता है। पृथ्वीराज विजय काव्य, शब्दकल्प, द्रुमकोष, लाडनूं लेखादि में चौहानों के निवास स्थान के संबंध में जांगलदेश, सपाललक्ष, अहिछत्रपुर आदि स्थानों का विशेष वर्णन मिलता है।

प्रारंभिक चौहानों के राज्य का प्रमुख भाग सपादलक्ष था और उनकी राजधानी अहिछत्रपुर थी। शाकम्भरी के चौहान राज्य का संस्थापक (आदि पुरुष) वासुदेव था जिसने सांभर (शाकम्भरी) क्षेत्र पर अपना अधिकार कर राज्य स्थापित किया। शाकम्भरी नाम स्थानीय देवी का था जिसका वासुदेव उपासक था। पृथ्वीराज विजय तथा सुरजन चरित्र ग्रन्थों से पता चलता है कि देवी की कृपा से वासुदेव सांभर झील का प्रवर्तक था। वासुदेव का समय 551 ई. माना जाता है। वासुदेव के बाद सामन्त शासक बना, बिजोलिया लेख के अनुसार वह शक्तिशाली शासक था और उसने राज्य का विस्तार किया। सामन्त के बाद नृप (नरदेव), जयराज, विग्रहराज, चन्द्रराज, गोपेन्द्रराज आदि शासक बने जिनकी किन्हीं उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त नहीं होती। गोपेन्द्रराज के बाद उसका पुत्र दुर्लभराज शासक बना, जो प्रतिहार नरेश वत्सराज का सामन्त था, जिसने वत्सराज की ओर से कन्नौज के लिए हुए त्रिकोणात्मक संघर्ष में भाग लिया, इस संघर्ष में उसने बंगाल के गौड़ शासक धर्मपाल को परास्त किया। वत्सराज का सहयोगी रहते हुए दुर्लभराज ने दोआब, मध्यप्रदेश और पालों पर विजय प्राप्त कर अपने वंश के गौरव को बढ़ाया। दुर्लभराज के बाद उसका पुत्र गूवक प्रथम शासक बना, वह एक शक्तिशाली राजा था। हर्ष अभिलेख में कहा गया है कि उसने नागावलोक की सभा में वीर के रूप में प्रसिद्धि पाई, यह नागावलोक प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय था। गूवक ने हर्षनाथ के मंदिर का निर्माण करवाया, इस समय तक चौहानों की राजनीतिक स्थिति सन्तोषजनक हो चुकी थी। उसका उत्तराधिकारी चन्द्रराज और उसका उत्तराधिकारी गूवक द्वितीय था। गूवक द्वितीय अपने पितामह गूवक प्रथम के समान ही वीर और साहसी था। गूवक द्वितीय ने अपनी बहिन कलावती का विवाह प्रतिहार शासक मिहिरभोज के किया, इस वैवाहिक संबंध ने चौहानों के राजनीतिक प्रभाव में वृद्धि हुई। गूवक द्वितीय ने अपने शौर्य और चतुरता से पैतृक राज्य का विस्तार किया। गूवक द्वितीय के बाद उसका पुत्र चन्दनराज शासक बना। चन्दनराज का दिल्ली के तोमर शासक रुद्र से संघर्ष हुआ। युद्ध में तोमर शासक मारा गया और चन्दनराज को विजय प्राप्त हुई। यहीं से चौहानों और तोमरों के मध्य दीर्घकालीन संघर्ष का सूत्रपात हुआ। चन्दनराज की पत्नी आत्मप्रभा शिव की महान भक्त थी जिसने पुष्कर झील के किनारे पर एक हजार शिवलिंगों की स्थापना करवाई। अपने नेक व जनकल्याणकारी कार्यों और यौगिक क्रियाओं में निपूणता के कारण वह 'योगिनी' नाम से प्रसिद्ध हुई। (क्रमशः)

## संभागप्रमुखों व प्रांतप्रमुखों की वर्चुअल बैठक

श्री क्षत्रिय युवक संघ के सत्र 2021-22 के लिए सहयोगियों की नियुक्ति जुलाई माह में कर दी गई है। सभी संभाग प्रमुखों ने अपने अपने संभाग के स्वयंसेवकों की भौतिक बैठक कर दायित्व सौंप दिये हैं व कार्ययोजना भी बना ली है। संभागीय बैठकों के बाद माननीय संघप्रमुख श्री के सानिध्य में 20 जुलाई की शाम संभाग प्रमुखों की केन्द्रीय कार्यकारियों के साथ वर्चुअल बैठक रखी गई। इस बैठक में सभी संभाग प्रमुखों ने अपनी अपनी संभागीय बैठकों का ब्यौरा प्रस्तुत किया। तत्पश्चात माननीय संघप्रमुख श्री ने बताया कि संभागप्रमुख अपने संभाग के सर्वोच्च सहयोगी होते हैं इसलिए वे संभाग में संघकार्य की समस्त गतिविधियों के प्रति जिम्मेदार हैं। उन्हें अपने संभाग के प्रांतप्रमुखों, संभागीय सहयोगियों, प्रांतीय सहयोगियों, मंडलप्रमुखों आदि सभी सहयोगियों के कार्य की नियमित समीक्षा करनी है और सभी का नियमित मार्गदर्शन करना है। उन्होंने कहा कि केन्द्रीय विभाग प्रभारी एवं संभागीय विभाग प्रभारी के बीच की कड़ी संभाग प्रमुख हैं इसलिए दोनों तरफ संपर्क रखें व केन्द्रीय प्रभारियों के सहयोग से अपने संभागीय सहयोगियों को सक्रिय रखें। आगामी माह में केन्द्रीय सहयोगियों की उपस्थिति में अपने अपने संभाग के सभी सहयोगियों की वर्चुअल बैठकें भी आयोजित करें। निर्धारित प्रारूप में अपनी मासिक रिपोर्ट समय पर भेजें एवं अपने सहयोगियों से भी ऐसा करवायें। केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ ने शिविरों के प्रस्ताव तैयार कर केन्द्र को भिजवाने को कहा ताकि तदनुकूल समय आदि तय किए जा सकें। मैदानी शाखाएं शुरू करने को लेकर केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा ने अपनी बात कही। सभी से बैठकों आदि कार्यक्रमों के प्रतिवेदन तैयार कर भेजने को कहा गया और उनकी एक एक प्रति अपनी फाईल में रखने को कहा गया। इसी क्रम में 22 जुलाई की शाम को प्रांतप्रमुखों की बैठक रखी गई। प्रारंभ में परिचयात्मक सत्र रखा गया जिसमें सभी प्रांतप्रमुखों ने अपना परिचय दिया। परिचय के पश्चात बैठक को संबोधित करते हुए संघप्रमुख श्री ने कहा कि हमें जो दायित्व सौंपा गया है वह सहयोगी का है इसलिए कभी भी मन में यह न आने दें कि आप कुछ बन गये हैं, बल्कि सदैव स्वयं को सहयोगी मानते रहें। उन्होंने कहा कि संघ के संगठनात्मक स्वरूप में प्रांतप्रमुख सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है क्योंकि वह एक कार्यकारी दायित्व है। इससे ऊपर के सभी सहयोगियों का काम कार्ययोजना एवं समीक्षा का अधिक रहता है जबकि प्रांतप्रमुख को उस कार्ययोजना को जमीन पर उतारना होता है और इसलिए वह अपने सभी साथी स्वयंसेवकों सहित यदि क्रियाशील होता है तब ही उक्त कार्ययोजना सफल होती है। उसका अपने साथी स्वयंसेवकों, सहयोगियों, उभरते स्वयंसेवकों आदि से जितना जीवंत संपर्क होता है उतनी ही क्रियाशीलता प्रांत में रहती है। इसलिए सभी से संपर्क बनाये रखना है, मिलते रहना है और प्रवास करना है। बैठक में प्रांतप्रमुखों के प्रश्नों व सुझावों पर भी चर्चा की गई। बैठक का संचालन केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्र सिंह आऊ ने किया।

# श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की कार्य विस्तार बैठकें

24 व 25 जुलाई को नागौर, पाली, बीकानेर व अजमेर जिलों में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की कार्य विस्तार बैठकों का आयोजन किया गया। नागौर जिले की लाडनूं तहसील की बैठक बगड़ा भवन लाडनूं में रखी गई। बैठक में उपस्थित समाज बंधुओं से चर्चा करते हुए बताया गया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज के लोगों में दायित्व बोध पैदा करता है। अपने आपके प्रति दायित्व, समाज व परिवार के प्रति दायित्व, इतिहास के प्रति दायित्व, राष्ट्र व सृष्टि के प्रति हमारे दायित्व का बोध होने पर हमारे में उसे पूरा करने की पीड़ा जागृत होती है। वह पीड़ा हमें उस दायित्व को पूरा करने के लिए क्षमतावान बनने की साधना में प्रणत करती है और श्री क्षत्रिय युवक संघ उसी साधना का स्वरूप है। उसी दायित्व बोध का परिणाम है संघ के आनुषांगिक संगठन। श्री प्रताप फाउंडेशन सामाजिक कार्यकताओं और समाज के राजनेताओं के बीच समन्वय स्थापित कर समाज को राजनीतिक रूप से मजबूत करने के लिए क्रियाशील है वहीं श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन समाज की युवा शक्ति की ऊर्जा को सकारात्मक रूप

लाडनूं

से संयोजित कर क्रियाशील करने को उद्यमशील है। कार्यक्रम में जयसिंह सागुबड़ी ने फाउंडेशन के करणीय कार्यों के बारे में बताया वहीं नरेंद्र सिंह राजोद ने फाउंडेशन द्वारा किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। श्री क्षत्रिय युवक संघ की कार्यप्रणाली, EWS प्रमाण पत्र बनवाने, इतिहास संरक्षण, राजनीतिक जागृति आदि विषयो पर कार्यक्रम को जितेंद्र सिंह सांवराद, राजेन्द्र सिंह धोलिया, रविन्द्र सिंह लाडनूं, विक्रमसिंह ढींगसरी आदि ने संबोधित किया।

पाली जिले में जैतारण, रायपुर और सोजत में क्रमशः शनिवार और रविवार को सम्पन्न हुई। बैठक में फाउंडेशन के केंद्रीय टीम सदस्य दिग्विजयसिंह कोलीवाड़ा ने फाउंडेशन के परिचय, उद्देश्य, कार्यप्रणाली और दो वर्षों के कामकाज पर विस्तृत जानकारी दी। श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रान्त प्रमुख मोहब्बत सिंह धींगाना ने संघ के हीरक जयंती वर्ष पर होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के बारे बताया। बैठक में सभी सदस्यों ने अपने क्षेत्र में ग्रामीण स्तर तक समाजबंधुओ को संयोजित कर फाउंडेशन के कार्य को आगे बढ़ाने पर चर्चा की, जिसमे मुख्य रूप से युवाओं को EWS प्रमाण पत्र बनवाने आदि अन्य सरकारी योजनाओं के प्रति सभी को जागरूक करने पर चर्चा हुई। बैठक के दौरान स्थानीय सहयोगी जितेंद्र सिंह रायपुर, ओम सिंह खारिया सोढा, मानवेन्द्र सिंह खोखरा, महिपाल सिंह गुड़िया, जितेंद्र सिंह मेसिया, मानवेन्द्र सिंह सरदारपुरा आदि उपस्थित रहे।

सोजत

बीकानेर जिले के कोलायत व पूगल में बैठक रखी गई। बैठक में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के गठन की आवश्यकता व उसके उद्देश्य पर चर्चा की गई। समाज के युवाओं में पिछले कई वर्षों से व्यवस्था के प्रति आ रहे नकारात्मक भावों को समाप्त कर सकारात्मक ऊर्जा का निर्माण करते हुए समाज व राष्ट्र के उत्थान में भागीदार बनने, संविधान द्वारा प्राप्त संवैधानिक साधनों का इस्तेमाल कर गाँव व कस्बे के गरीब पीड़ित व शोषित को न्याय व सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाने हेतु काम करने, राजनीतिक, सामाजिक, प्रशासनिक क्षेत्र में काम करने वाले समाज के व्यक्तियों का आपस मे सामंजस्य स्थापित करने, शिक्षा, सरकारी भर्तियों व रोजगार के लिए समाज के युवाओं को तैयार करने आदि उद्देश्यों को लेकर बैठक में बताया गया। केंद्र सरकार की शिक्षा व नौकरियों में आर्थिक पिछड़ा वर्ग आरक्षण में आ रही बाधाओं को दूर करने के लिए संगठन द्वारा प्रदेश स्तर पर किये जा रहे प्रयासों से सभी को अवगत कराया गया। इन दोनों बैठकों में श्री क्षत्रिय युवक संघ के संभाग प्रमुख रेवंत सिंह जाखासर, श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की केंद्रीय टीम के सदस्य राम सिंह चरकड़ा व खींव सिंह सुल्ताना, जुगल सिंह बेलासर, नवीन सिंह भवाद, रिछपाल सिंह बगसेऊ, सतवीर सिंह हाडला, महेन्दर सिंह भोलासर आदि शामिल हुए। अजमेर जिले के सवराड़ में भी रविवार को ही बैठक रखी गई जिसमें फाउंडेशन की गतिविधियों की जानकारी दी गई।

# गुजरात में सांघिक गतिविधियां

संघ के हीरक जयंती वर्ष के अंतर्गत तीर्थदर्शन कार्यक्रम के अंतर्गत एक चिंतन बैठक पाटण प्रान्त की चाणस्मा तहसील के कंबोई गांव स्थित राजपूतवाड़ी में 12 जुलाई को आयोजित हुई। बैठक के दौरान पाटण प्रांत प्रमुख धर्मेंद्र सिंह मोटी चंदुर तथा बनासकांठा प्रांत प्रमुख अजीत सिंह कुणघेर ने उपस्थित समाज बंधुओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ के उद्देश्य और कार्यप्रणाली की जानकारी प्रदान की तथा 20 वर्ष पूर्व कम्बोई गांव में लगे संघ के प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर के संस्मरण साझा किए। कार्यक्रम के दौरान नरसिंह, हमीर सिंह, विष्णु सिंह, जय सिंह, बलदेव सिंह, इंद्र सिंह सहित अनेकों ग्राम वासी उपस्थित रहे। इसी प्रकार मेहसाणा जिले के मोढेरा में भी 18 जुलाई को एक चिंतन बैठक का आयोजन किया गया जिसमें धर्मेंद्र सिंह मोटी चंदुर, अजीत सिंह कुणघेर तथा मेहसाणा प्रांत प्रमुख इंद्रजीत सिंह जेतलवासना स्वयंसेवकों सहित उपस्थित रहे। मेजरपुरा के पूर्व प्रधानाध्यापक हेमू जी मोढेरा ने व्यवस्था में सहयोग किया। कार्यक्रम के दौरान मोढेरा के युवाओं ने मोढेरा में शाखा प्रारंभ करने की प्रतिबद्धता जताई। 18 जुलाई को ही पाटन प्रांत के वड़ावली गांव में भी एक चिंतन बैठक का आयोजन हुआ। दिलीप सिंह चावड़ा के निवास पर आयोजित बैठक में वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह हरदास का बास, अजीत सिंह कुणघेर, धर्मेंद्र सिंह मोटी चंदुर, इंद्रजीत सिंह जेतलवासना तथा पूर्ण चंद्र सिंह छेलीगोड़ी ने अपने विचार व्यक्त किए। इस दौरान वडावली में शाखा प्रारंभ करने का दायित्व गजेंद्र सिंह, दिलीप सिंह तथा युवराज सिंह ने लिया। इसी प्रकार मध्य गुजरात संभाग की संभागीय बैठक 18 जुलाई को सूरत शहर में विक्रम सिंह वरिया के आवास पर आयोजित हुई जिसमें संभाग

मोढेरा

के स्वयंसेवक सम्मिलित हुए और सत्र 2021-22 के लिए कार्य योजना पर चर्चा की गई। बैठक के दौरान विभिन्न स्वयंसेवकों को संघ संबंधी दायित्व सौंपे गए। गुजरात के जाम कंडोराना तालुका के 'ढाक्का नी धार' नामक स्थान पर 2002 में एक शिविर आयोजित हुआ था। इसी तिथि में कंडोरना तालुका के ही थोरड़ी तंतेश्वर महादेव मंदिर में भी शिविर हुआ था। इन दोनों शिविरों में सहयोगी रहे समाज बंधुओं, शिविरार्थियों से मिलने के लिए 16 जुलाई को संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम के तहत एक स्नेहमिलन आयोजित किया गया जिसमें संघ दर्शन को लेकर चर्चा की गई। थोरड़ी में आयोजित समाज की वार्षिक आम सभा में भी संघ दर्शन को लेकर जानकारी दी गई। बनासकांठा प्रांत के अंतर्गत दांतीवाड़ा तहसील के मोटी महुडी गांव में भी 25 जुलाई को एक चिंतन बैठक का आयोजन हुआ। प्रांत प्रमुख अजीत सिंह कुणघेर तथा ईश्वर सिंह आरखी ने उपस्थित समाजबंधुओं को संघ के उद्देश्य एवं कार्य प्रणाली के संबंध में जानकारी प्रदान की। बैठक के दौरान मोटी महुडी, कुणघेर, आरखी, पांथावाड़ा, सवराखा, धनियावाड़ा, चारड़ा आदि गांवों से समाज बंधु उपस्थित रहे।

## बलिदान दिवस समारोह का पोस्टर व पेम्पलेट विमोचन

श्री क्षत्रिय युवक संघ के हीरक जयंती वर्ष के तहत आयोजित किये जा रहे 75 बड़े कार्यक्रमों की श्रृंखला में जालोर संभाग के सिरोही प्रांत द्वारा जावाल मंडल के मांडाणी गांव में 25 सितम्बर 2021 को 12.15 बजे क्षत्रियत्व की प्रतिमूर्ति वीरवर जेतसिंह जी बोड़ा का बलिदान दिवस के मनाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के गांव- गांव में प्रचार-प्रसार हेतु पोस्टर व पेम्पलेट का विमोचन कार्यक्रम 23 जुलाई को सियाणा में पूर्व प्रधान प्रदीप सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी, सिरोही सह प्रांत प्रमुख अमरसिंह चाँदणा, जावाल मंडल प्रमुख शक्ति सिंह माँडाणी, देवराज सिंह माँडाणी, हीरसिंह काणदर आदि उपस्थित रहे।

## पाली के मंडल प्रमुखों की वर्चुअल बैठक

पाली प्रांत के मंडलप्रमुखों की 16 जुलाई को वर्चुअल बैठक रखी गई। बैठक में संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने मंडल प्रमुख के दायित्वों की विस्तार से जानकारी दी। प्रांतप्रमुख मोहब्बत सिंह धींगाणा ने विगत सत्र में लगी शाखाओं व संभावित शाखाओं की चर्चा की। मंडलवार हुए शिविरों पर चर्चा हुई। मंडल प्रमुखों ने संभावित शाखाओं को चिह्नित किया। उभरते स्वयंसेवकों के नामों पर चर्चा की गई एवं मंडलवार उनसे संपर्क व सक्रियता की योजना बनाई गई।

संपादकीय

# जहरीला प्रचार और जाति

दुष्प्रचार एक जहरीला साधन है जो प्रतिपक्षी को नेस्तनाबूत करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। यदि इस साधन का प्रयोग करने वाले लोग पर्याप्त शक्तिशाली हों और उन्हें सत्ता का सहारा मिल जाये तो इस साधन की मारक क्षमता इतनी अधिक होती है कि सही बात भी गलत साबित कर दी जाती है और जिनके खिलाफ इस साधन का उपयोग किया जाता है वे स्वयं भी कालांतर में इस निखालिस झूठे प्रचार को सही मानने लगते हैं। आजादी के बाद सत्ता में आये लोगों का यह प्रमुख साधन बना और उन्होंने इसके बल पर अपने से पहले की व्यवस्था पर भरपूर प्रहार कर उसे नाकारा साबित करने का हर संभव प्रयास किया। पूर्ववर्ती व्यवस्था की अनेक संस्थाओं पर इस जहरीले प्रचार ने घातक आक्रमण किया। उन्हीं संस्थाओं में से एक है 'जाति'। जाति शब्द समूह का उत्कृष्ट रूप है। यह एक ऐसे जन समूह का द्योतक है जो किन्हीं विशिष्ट प्रकार की समानताओं के कारण किसी अन्य जनसमूह से भिन्न हो। इस प्रकार जाति एक पहचान है। अन्य से भिन्न और अपने आप में एक होने का एक का मापदंड है। परंपरागत रूप से जो जातियां हमारे यहां प्रचलन है उनका आधार जन्म ही रहा है लेकिन वास्तव में तो ऐसा कोई भी समूह जो अपने आप में अनेक समानताओं के कारण संगठित हो और अन्यों से भिन्न हो, वह एक जाति ही है। इसी दृष्टिकोण से पूज्य तनसिंह जी ने अपनी पुस्तक 'समाज चरित्र' के प्रकरण 'साधक की जातीय भावना' में कांग्रेस, वामपंथ आदि को भी एक जाति ही कहा है। इसी प्रकरण में उन्होंने लिखा है कि आजादी के बाद जाति के खिलाफ जो जहरीला प्रचार किया गया उसके कारण सांप्रदायिकता जैसे शब्दों का भरपूर उपयोग होने लगा और देश में इसके शिकार हिंदू हुए वहीं राजस्थान में इसके शिकार राजपूत हुए। यदि जाट कोई किसान छात्रावास बनायें तो उनको सांप्रदायिक या जातिवादी नहीं कहा जाता जबकि राजपूत यदि हणवंत बोर्डिंग बनायें तो उन्हें जातिवादी या सांप्रदायिक कहा गया। इस दुष्प्रचार का प्रभाव संसार पर ही नहीं पड़ा बल्कि हमारे स्वयं पर भी पड़ा। प्रदेश और देश के अन्य जातियों के लोग इस दुष्प्रचार से प्रभावित होकर हमारे खिलाफ हुए, हमारे खिलाफ दुष्प्रचार करने वाले लोगों के प्रभाव में आकर उनके सहयोगी बने और परिणाम स्वरूप वोट के रूप में जनसमर्थन हासिल करने की प्रक्रिया में हमें किनारे करने का एक बहाना मिल गया और इस बहाने का भरपूर उपयोग हुआ। लेकिन यहां इस लेख का विचारणीय बिंदु उन पर पड़ा दुष्प्रभाव नहीं है बल्कि हमारी अपनी सोच पर पड़ा दुष्प्रभाव है। जाति शब्द के प्रति फैली नकारात्मकता ने हमारे ही समाज के लोगों में एक आत्म हीनता एवं अपराध बोध पैदा किया और परिणाम स्वरूप व्यक्तिगत रूप से अपने अंतर में पर्याप्त जातीय भाव रखते हुए समाज के सज्जन लोग सार्वजनिक रूप से जाति की बात करने से बचने लगे। आज हमारे राजनेता, हमारे अधिकारी, हमारे अन्य प्रतिष्ठित लोग यदि हमारी जाति का न्यायपूर्ण पक्ष भी रखते हैं तो यह जहरीला प्रचार तंत्र तुरंत सक्रिय होता है और उनको जातिवादी घोषित करने की मुहिम चला देता है। यही नहीं यदि हमारे ये लोग ऐसा न करें तो भी कोई न कोई बहाना बनाकर ऐसा दुष्प्रचार चलाकर यह प्रदर्शित करने का प्रयास किया जाता है जैसे सबसे बड़े जातिवादी हमारे ही लोग हैं। उत्तरप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के खिलाफ चला इसी प्रकार का दुष्प्रचार इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। इस दुष्प्रचार प्रणाली का ही परिणाम है कि हमारे लोग जाति की बात करते हुए कतराते हैं। सार्वजनिक मंच पर न्यायपूर्ण बात करते हुए कतराते हैं और भले लोगों के ऐसे अपराधबोध का ही परिणाम है कि समाज के नेतृत्व की पंक्ति में ऐसे श्रेष्ठ लोगों की कमी दिखाई देती है। प्रकृति का यह नियम है कि स्थान कोई खाली नहीं रहता इसलिए उनकी जगह ऐसे लोग समाज की आवाज बनते हैं जिनको नहीं होना चाहिए और हमारे समाज की यह विडंबना है कि ऐसा होते हुए हमने देखा है और उसका परिणाम भी भुगत रहे हैं।

कारण हमने जान लिया और परिणाम भी हम जानते हैं तो फिर कारण का निवारण शेष रहता है और उस निवारण के मार्ग मे सबसे बड़ी बाधा हमारा भय है। एक ऐसा भय जिसका वास्तव में कोई अस्तित्व नहीं है। एक ऐसा भय जो हमारे पर थोपा गया है अथवा यह कहें कि हमने साहस के अभाव में ओढ़ लिया है। पूज्य तनसिंह जी ने लिखा है कि भय उसी से भय खाता है जो भय से भय नहीं खाता। ऐसे में इस भय का निवारण भी भय के भय को नेस्तनाबूत करना ही है। ऐसा करने के लिए हमें इस दुष्प्रचार के आवरण से बाहर निकलना पड़ेगा। आश्चर्य होता है जब कोई व्यक्ति श्री क्षत्रिय युवक संघ जैसी दायित्वबोध सिखाने वाली संस्था से अपने जुड़ाव को भी इस भय से सार्वजनिक करने से डरता है कि कोई उसे जातिवादी कह देगा। क्या क्षत्रियत्व में भी जातिवाद है? क्या स्वयं मरकर अन्यों को जीवन देने की परंपरा में भी जातिवाद हो सकता है लेकिन दुष्प्रचार के कुचक्र ने अमृत को भी जहर बताना शुरू किया और हमने भी ओढी हुई खोखली नैतिकता के प्रभाव में अमृत को जहर मानना शुरू कर दिया। इस कुचक्र को तोड़ने का एक मात्र उपाय इस मिथ्या भय को नकारना है। जाति मेरी पहचान है इस बात को मजबूती से कहना पड़ेगा। इस जातीय पहचान ने मुझे उत्कृष्ट पूर्वज परंपरा दी है इस बात को सार्वजनिक रूप से कहना पड़ेगा। यह पूर्वज परंपरा कभी भी किसी 'वाद' की पोषक नहीं रही बल्कि आजकल के 'वादों' से परे सदैव ईश्वरीय भाव की पोषक रही है, यह भी कहना पड़ेगा। मुझे ऐसी श्रेष्ठ पूर्वज परंपरा इस जाति में जन्म लेने के कारण मिली है, यह कहना पड़ेगा और इस बात का मुझे गर्व है यह भी सार्वजनिक रूप से उद्घोष करना पड़ेगा। सार्वजनिक रूप से ऐसा भी कहना पड़ेगा कि मैं एक क्षत्रिय हूं, राजपूत के घर जन्मा हूं और यही कारण है कि मैं जातिवादी नहीं हूं। एक राजपूत होना और जातिवादी होना दो विपरीत बाते हैं इसलिए मैं जब तक राजपूत रहूंगा, जातिवादी नहीं बन सकता और मेरे में जितना रजपूती का अभाव होगा उतना ही जातिवाद आयेगा। समाज के भले लोगों का, श्रेष्ठ लोगों का, ज्येष्ठ लोगों का ऐसा उद्घोष ही हमें इस मिथ्या भय से मुक्त करेगा और हमें इस मुक्ति की शुरूआत अपने आप से करनी पड़ेगी। हम ऐसी शुरूआत करेंगे तो संभव है कि जिन लोगों को हम भला मानते हैं, श्रेष्ठ मानते हैं, ज्येष्ठ मानते हैं या संसार जिन्हें श्रेष्ठ और ज्येष्ठ मानता है वे भी अपने इस मिथ्या भय से मुक्त होने को तत्पर हो सकेंगे क्योंकि इसके अभाव में इस दुष्प्रचार के प्रभाव से मुक्त नहीं हुआ जा सकता। हमें यह समझना पड़ेगा कि परिवारवाद बूरा है परंतु उसे समाप्त करने के लिए परिवार नामक संस्था के अस्तित्व पर प्रश्न उठाना तर्कसंगत नहीं है। भाषावाद को मिटाने के लिए भाषा को मिटाने की बात मूर्खता ही कही जाएगी। प्रांतवाद को मिटाने के लिए प्रांतो को नहीं मिटाया जा सकता। क्या राष्ट्रवाद की कमियों को मिटाने के लिए राष्ट्रों को मिटा देंगे? जब हम परिवारवाद के खिलाफ परिवार को नहीं मिटाते, भाषावाद के खिलाफ भाषा को नहीं मिटाते, प्रांतवाद के खिलाफ प्रांत को नहीं मिटाते और राष्ट्रवाद के खिलाफ राष्ट्र को नहीं मिटाते तो फिर जातिवाद के कारण जाति के खिलाफ क्यों हो जाते हैं? इस बात को हमें सार्वजनिक रूप से मजबूती से कहना पड़ेगा और तब ही जाति की अपेक्षा जातिवाद को मिटाया जा सकेगा। हमें यह स्थापित करना पड़ेगा कि जाति हमारी संस्कृति का स्याह पक्ष नहीं है, जातिगत भेदभाव स्याह पक्ष है और वर्तमान में जातिवाद स्याह पक्ष है। इस स्याह पक्ष का हमें एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में विरोध करना है पर जाति नामक संस्था के उज्ज्वल पक्ष को मजबूती से रखना है। यही उपाय है इस जहरीले दुष्प्रचार के कारण उत्पन्न निर्मूल भय के विनाश का।

# संभागीय व प्रांतीय बैठकें संपन्न

मेवाड़-वागड़ तथा मेवाड़-मालवा संभाग की संभागीय बैठक उदयपुर के ओस्तवाल नगर स्थित खारड़ा हाउस में केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली की उपस्थिति में संपन्न हुई। संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला तथा बृजराज सिंह खारड़ा द्वारा उपस्थित स्वयंसेवकों को आलोक आश्रम बाड़मेर में आयोजित केंद्रीय बैठक के दौरान लिए गए निर्णयों की जानकारी प्रदान की गई तथा आगामी सत्र के लिए दोनों संभागों के स्वयंसेवकों को विभिन्न दायित्व सौंपे गए। नागौर संभाग के नागौर प्रान्त की प्रांतीय बैठक प्रान्त प्रमुख उगम सिंह गोकुल के नागौर शहर स्थित आवास पर 25 जुलाई को आयोजित हुआ जिसमे जबर सिंह खारीकर्मसोता, श्याम सिंह छापडा, सुरेन्द्र सिंह निम्बोला, बजरंग सिंह भुण्डेल, जब्बर सिंह दौलतपुरा आदि स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

# हल्दीघाटी से हटाई विवादास्पद सूचना पट्टिका

इतिहास को विवादास्पद बनाकर मिथ्या जानकारी परोसना अंग्रेजों व आजादी के बाद के सत्ताधारियों का पसंदीदा कार्य रहा ताकि वे भारत की भारतीयता की प्रेरणा को कुंद कर स्वयं को भारत के भाग्य विधाता के रूप में स्थापित कर सकें। इसी क्रम में हल्दीघाटी के युद्ध में महाराणा प्रताप की पराजय प्रचारित की गई। विद्यालयी व महाविद्यालयी पाठ्यक्रम में यही पढ़ाया जाता रहा और पर्यटन स्थलों पर सूचना पट्टिकाओं में भी यह ही दर्शाया गया। विगत वर्षों में इतिहास के प्रति बढ़ी जागरुकता ने इस विषय की वास्तविकता को लोगों के समक्ष उजागर किया। यह बताया गया कि हल्दीघाटी के युद्ध में आक्रमणकारी अकबर था और उसका उद्धेश्य मेवाड़ को जीतकर महाराणा प्रताप को झुकाना अथवा जिंदा या मूर्दा पकड़ना था लेकिन इस युद्ध में उसका कोई भी लक्ष्य पूर्ण नहीं हुआ। इसके विपरीत इस युद्ध के उपरांत उसकी सेना की दुर्गति हुई जिसका वर्णन उसके दरबारी लेखकों ने विस्तार से किया है। इस जागरुकता के परिणामस्वरूप वर्तमान केन्द्र सरकार के अधीन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने हल्दीघाटी में राजस्थान पर्यटन निगम द्वारा लगाई गई ऐसे सभी सूचना पट्टिकाओं को हटाने का निर्देश दिया है जिसमें महाराणा प्रताप द्वारा कदम पीछे खींचे जाने की गलत जानकारी दी गई थी। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग यहां शीघ्र ही नयी सूचना पट्टिकाएं लगवायेगा जिसमें महाराणा प्रताप की निर्णायक विजय का उल्लेख होगा।

(पृष्ठ एक का शेष)

**सेवा...** सुनकर उसका पालन कर रहे हैं या नहीं यह भी हमारे पर निर्भर करता है। यदि हम ऐसा नहीं कर पाते हैं तो निश्चित रूप से हमारे परमोत्कर्ष में देरी होगी, जन्मों का फेर पड़ जाएगा। इसलिए हमारा दायित्व है कि हम हमारे भीतर स्थित गुरु तत्व का आदेश सुनें और उसका पालन करने में प्रवृत्त हों। सेवा का महत्व बताते हुए उन्होंने कहा कि मुझे स्वामी जी ने कहा कि जो कर रहे हो वही करते रहो, यह मानव सेवा है और सेवा ही सबसे बड़ी आज्ञापालन है। चाहे पुत्र माता पिता की सेवा करे या पत्नी पति की सेवा करे, सभी प्रकार की सेवा का महत्व है और यह सेवा ही हमें श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करेगी। माननीय संरक्षक महोदय ने उपस्थित स्वयंसेवकों से कहा कि मैं अपने आपको गुरु नहीं मानता इसीलिए आपको शिष्य भी नहीं मान सकता लेकिन मैं आपकी भावनाओं को परम पिता परमेश्वर के चरणों में अर्पित करता हूं क्योंकि वे हम सब के गुरु हैं, पूरे संसार के गुरु हैं। वे हम सबको अपनी ओर बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करें। इस अवसर पर गुजरात के अनेक स्वयंसेवक परिवार सहित बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम आये एवं पूरे दिन माननीय संरक्षक महोदय का सानिध्य व मार्गदर्शन प्राप्त किया। औपचारिक गुरु पूर्णिमा कार्यक्रम में केन्द्रीय कार्यकारी महेन्द्रसिंह पांची ने कहा कि हमारे लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ का काम ही गुरु आज्ञा का पालन करना है। वह यदि हम नहीं करते हैं तो हमारे द्वारा की जाने वाली औपचारिक क्रियाएं मात्र औपचारिकता बनकर पाखंड का स्वरूप ले लेंगी इसलिए हमारे द्वारा संघ की आज्ञा का पालन करना ही वास्तव में गुरु की सेवा होगी। केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति, जयपुर' में

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर भजन संध्या का आयोजन किया गया। सभी स्वयंसेवकों ने रामचरितमानस का पाठ किया। बीकानेर संभाग के श्री डूंगरगढ़ प्रांत के झंझेऊ गांव की शाखा में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर अधिकतम संख्या दिवस मनाया गया। इस अवसर पर उपस्थित महिलाओं, पुरुषों व बालक बालिकाओं को संबोधित करते हुए संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक जोरावर सिंह भादला ने भगवान वेदव्यास जी का संक्षिप्त परिचय देते हुए गुरु पूर्णिमा का महत्व समझाया। उन्होंने क्षत्रियत्व के महत्व व आज के युग में प्रासंगिकता के बारे में बोलते हुए गीता में वर्णित क्षत्रिय के गुणों के बारे में बताया व श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा उन्हें हासिल करवाने के लिए किए जाने वाले अभ्यास की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन चुरू प्रांतप्रमुख राजेंद्र सिंह आलसर ने किया। कार्यक्रम में संभाग प्रमुख रेवंतसिंह जाखासर, वरिष्ठ स्वयंसेवक भरतसिंह सेरुणा, भागीरथ सिंह सेरूणा आदि भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में यथार्थ गीता व हीरक जयंती पताका का वितरण किया गया। नारायण सांयकालीन शाखा 'तनायन' जोधपुर में आज गुरु पूर्णिमा का उत्सव जोधपुर शहर प्रांत प्रमुख श्री भरतपाल सिंह जी दासपा के सानिध्य में मनाया गया। भरतपाल सिंह ने बताया कि इसी दिन वेद और उपनिषद, पुराणों के प्रणेता महर्षि वेदव्यास जी का जन्म हुआ था उनको याद करने के लिए इसे गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाते हैं गुरु हमारे मार्गदर्शक होते हैं तथा हमें सही दिशा प्रदान करते हैं इस अवसर पर शाखा के स्वयंसेवक उपस्थित रहे तथा चंदन के रुप में गुरु प्रसाद वितरण करके कार्यक्रम पूर्ण हुआ।

**केन्द्रीय मंत्रियों...**

उन्होंने कहा कि कुछ अन्य राज्यों से भी इस आरक्षण बाबत व्यवहारिक समस्याओं की बात आई है। हम उनका भी अध्ययन कर रहे हैं और उसके बाद पूरे विषय के समाधान का एक नोट बनाकर केबिनेट में पेश कर देंगे। माननीय गजेन्द्रसिंह ने अपने स्वयं के लेटर हैड पर पूरे विषय का उल्लेख करते हुए समाज कल्याण एवं अधिकारिता मंत्रालय को एक पत्र भी भेजा। दोनों ही माननीय मंत्रियों ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वस्त किया कि वे इस विषय को माननीय प्रधानमंत्री जी के समक्ष रखकर उनसे समाधान का आग्रह किया जाएगा।

(पृष्ठ चार का शेष)

**संभागीय...**

बैठक के दौरान आगामी सत्र के लिए प्रान्त में किए जाने वाले संघ कार्यों पर चर्चा की गई तथा इसके लिए विभिन्न दायित्व उपस्थित स्वयंसेवकों को सौंपे गए। लाडनूं-सुजानगढ़ प्रांत की प्रांतीय बैठक 24 जुलाई को वरिष्ठ स्वयंसेवक भगवत सिंह सिंघाना के आवास पर आयोजित हुआ। बैठक के दौरान आगामी सत्र के लिए प्रांत स्तर पर तथा डीडवाना, लाडनूं, सुजानगढ़ और बिदासर मंडल के लिए दायित्व सौंपे गए। आगामी 30 जुलाई को पूज्य श्री नारायण सिंह जी रेडा की जयंती मनाने के संबंध में भी चर्चा की गई। प्रांत प्रमुख विक्रम सिंह ढींगसरी स्वयंसेवकों सहित बैठक में उपस्थित रहे।

# राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयनित राजपूत

राजस्थान प्रशासनिक सेवा परीक्षा 2018 का परिणाम विगत माह घोषित हुआ है। इस परीक्षा में हमारे समाज से चयनित अभ्यर्थियों की सूची यहां साझा की जा रही है। हालांकि हमारे स्रोतों से प्राप्त जानकारी के अनुसार सूची प्रकाशन में सावधानी बरती जा रही है लेकिन फिर भी हो सकता है कुछ नाम इस सूची में आने से छूट गये हों या नामों के प्रकाशन में त्रुटि रही हो। इसलिए इससे अधिक सही एवं प्रमाणिक जानकारी के लिए पाठकों को व्यक्तिगत प्रयास करने चाहिए।

1. बीनू देवल रैंक 8
2. दिव्यराज सिंह चुंडावत रैंक 38
3. कुलदीप सिंह शेखावत रैंक 43
4. शिवराज सिंह जाखल रैंक 51
5. नीतु राठौड़ रैंक 53
6. वर्षा रैंक 73
7. अरविंद सिंह बालावत रैंक 88
8. रचना राठौड़ रैंक 91
9. राजेंद्र सिंह राठौड़ रैंक 99
10. सुरेंद्र सिंह राठौड़ रैंक 132
11. शिवेंद्र सिंह राठौड़ रैंक 135
12. नीलम राठौड़ रैंक 149
13. नारायण सिंह भाटी रैंक 151
14. पुष्पेन्द्रसिंह राजावत रैंक 154
15. डॉ. वीपी सिंह नरुका रैंक 169
16. करिष्मा राणावत रैंक 183
17. जितेंद्र सिंह इंदा रैंक 184
18. प्रवीण सिंह राठौड़ रैंक 226
19. हेमेंद्र सिंह भाटी रैंक 231
20. अल्का शेखावत रैंक 239
21. अजयसिंह नाथावत रैंक 259
22. मोहित सिंह रैंक 265
23. विश्वजीत सिंह जैतावत रैंक 281
24. कर्मवीरसिंह राणावत रैंक 292
25. दीपेन्द्र सिंह राठौड़ रैंक 298
26. जयपाल सिंह केराल रैंक 307
27. गिरिराजसिंह नरावत रैंक 311
28. भगवान सिंह रैंक 352
29. आदित्य सिंह परिहार रैंक 359
30. जितेंद्र राठौड़ रैंक 378
31. शिवराज सिंह राजवी रैंक 363
32. अक्षयवीर सिंह चुंडावत रैंक 394
33. रिपुदमनसिंह राठौड़ रैंक 420
34. दीपेंद्र सिंह रैंक 423
35. हनुएंद्र सिंह राणावत रैंक 437
36. उगमसिंह रैंक 452
37. कुशाल सिंह राणावत रैंक 454, NG-16
38. रणविजय सिंह रैंक 464
39. निरंजन राठौड़ रैंक 483
40. राजेंद्र सिंह इंदा रैंक 493
41. अभिमन्यु सिंह पुरावत रैंक 495
42. अजीतसिंह राठौड़ रैंक 498
43. पुष्पेंद्र सिंह देवल रैंक 501
44. महिपाल सिंह रैंक 506
45. प्रवीण सिंह रैंक 518
46. मौर कंवर रैंक 519
47. दिलावरसिंह चौहान रैंक 520
48. चन्द्रवीर सिंह देवड़ा रैंक 523
49. यशवंत सिंह राठौड़ रैंक 545
50. हुकम सिंह सिसोदिया एक्स-7 रैंक 552
51. मधु कंवर रैंक 563
52. ब्रिजेन्द्र सिंह राठौड़ एक्स-7 रैंक 572
53. शिवराज सिंह राठौड़ रैंक 586
54. जितेंद्र सिंह राठौड़ रैंक 600
55. नरेंद्र सिंह जैतियावास रैंक 637
56. अर्जुन सिंह डेह रैंक 640
57. इंदु तंवर रैंक 791
58. जागृति सिसोदिया (TSP-11) रैंक 966
59. राजवीर सिंह चौहान TSP-13 रैंक 1057
60. मुलेन्द्र सिंह एक्स-11 रैंक 1301
61. समुंद्र सिंह एक्स-21 रैंक 1322
62. विक्रम सिंह शेखावत रैंक 1682
63. भवानीसिंह एक्स-69 रैंक 1689
64. मनोज कंवर WD-4 रैंक 1694
65. सोनु शेखावत WD रैंक 1868

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

# साप्ताहिक केन्द्रीय शाखा में व्यवहारिक मार्गदर्शन

18 जुलाई को संघ शक्ति की रविवारीय शाखा में पूज्य श्री तन सिंह जी की डायरी के अवतरण संख्या 202 पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने बताया कि हमारे हृदय तथा बुद्धि में गहरी मित्रता होना एक आदर्श स्थिति है। जब भी कोई समस्या हमारे सामने आती हैं तब हृदय और बुद्धि दोनों ही सत्ताएं जागृत होकर समस्या का विश्लेषण करती हैं। हृदय बुद्धि से सहयोग मांगता है और बुद्धि हृदय का अनुसरण करती है। बुद्धि हृदय से मार्गदर्शन मांगती हैं और हृदय बिना इंद्रियों के भी कुछ तथ्यों को जानकर निर्णय दे देता है। जब भी हमारी बुद्धि हृदय के भावगत निर्णय का समर्थन करती है तब हमारे लिए वह समाधान स्थाई बन जाता है। किंतु यदि हमारी हृदय और बुद्धि में तालमेल ना हो तो भटकाने वाली स्थिति बन सकती है। हृदय और बुद्धि में तालमेल की जिस स्थिति का इस अवतरण में वर्णन है, वह पूज्य श्री तन सिंह जी की स्थिति है। हम भी ऐसी सामंजस्य की स्थिति अपने जीवन में लाने के लिए प्रयास करें। यह केवल किसी आदेश से नहीं बल्कि अभ्यास से ही संभव है। यह तालमेल होने पर ही हमारी सभी शक्तियां सक्रिय होती हैं। तालमेल बिठाने के लिए हमें इन सत्ताओं को ठीक-ठीक पहचानना होगा। विचार बुद्धि का क्षेत्र है, मन का नहीं। इसी प्रकार भाव हृदय की भाषा है। जिस वातावरण में हम जीते हैं उसी के अनुसार हमारे भाव बनते हैं। किंतु कोरी भावुकता निरंकुश हो जाती है, उस पर बुद्धि का अंकुश भी होना आवश्यक है। किंतु मालिक की भूमिका हृदय के पास ही होनी चाहिए। यदि हमारा हृदय, हमारे भाव पूर्णतया बुद्धि के अधीन हो जाए तो गड़बड़ प्रारंभ हो जाती है, तालमेल बिगड़ जाता है। भावनाओं को दिशा देना बुद्धि का कार्य है। अवतरण की व्याख्या के पश्चात उन्होंने स्वयंसेवकों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का समाधान करते हुए बताया कि हम संघ के स्वयंसेवक हैं इसलिए हमारी बुद्धि और हमारा भाव संघ के अनुकूल होना चाहिए। निर्णय लेने में भले ही हमें कुछ समय लग जाए लेकिन हमारा निर्णय संघ के शिक्षण के अनुकूल होना चाहिए। संघ में केवल भौतिक रूप से आना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि उसके शिक्षण को अभ्यास द्वारा जीवन में उतारना आवश्यक है। साथ ही स्वयं को संघ के सामने प्रकट करना भी हमारे विकास के लिए आवश्यक है। यदि हम संघ से स्वयं को छुपा कर रखेंगे तो हम साधक ही नहीं रहेंगे। हमें ध्यान रखना होगा कि हमारा हृदय अथवा बुद्धि दोनों में से कोई भी अति पर नहीं जाना चाहिए अन्यथा हमारे व्यक्तित्व का सामंजस्य बिगड़ जाएगा।

इसी प्रकार 25 जुलाई की शाखा में डायरी के अवतरण संख्या 263 पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हमें चाहिए कि हम अपनी संपूर्ण सत्ता को अपने ध्येय के प्रति लगा दें। ऐसा होने पर ही जीवन संगीतमय बनता है, उसमें ताल, लय और गति आती हैं। हमारी संपूर्ण सत्ता के ध्येय के प्रति समर्पित होने पर ही हमारे भीतर सच्चा उत्साह जागृत होता है। ऐसा उत्साह होने पर हम देश, काल और परिस्थिति के प्रतिकूल होने पर भी आगे बढ़ते रहेंगे। हम हमारे जीवन को इस प्रकार नियंत्रित करें कि यदि हमने संघ के मार्ग पर चलने का निर्णय लिया है तो उसमें बेसुरापन ना हो। ऐसा तभी होगा जब हमारी सभी सत्ताओं- मन, बुद्धि, हृदय में तालमेल हो। यह तालमेल जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होना चाहिए। यदि हम संघ में अनुशासित हैं लेकिन घर में अथवा कार्यालय में उस प्रकार से नहीं रहते तो इसका अर्थ है कि हमारी सत्ताएं बिखरी हुई हैं। बिखरी हुई सत्ता जीवन को संगीतमय नहीं बना सकती। जीवन संगीत तो सभी सत्ताओं के एक लय में होने पर ही उत्पन्न होता है। संघ का यह अनुभव रहा है कि अनेक बार विकट उत्साह से कार्य करने वाले भी मार्ग से भटक कर खो जाते हैं क्योंकि वे अपने जीवन की सम्पूर्ण सत्ताओं में

तालमेल नहीं बिठा सके। जो तालमेल बिठा लेता है वह सभी बाधाओं को पार कर लेता है और जो तालमेल नहीं बिठाते हैं वे अपने आप में ही बाधाएं पैदा कर लेते हैं। हमने संघ को अपनाया है तो हमारा समस्त समर्पण संघ के लिए होना चाहिए। जीवन के समस्त व्यापारों में हमारी प्राथमिकता संघ होना चाहिए तभी हम संघ के आदर्श स्वयंसेवक बनने की ओर अग्रसर होंगे। आगे उन्होंने स्वयंसेवकों की जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए कहा कि केवल सांसारिक दायित्व में तालमेल बिठा लेना ही पर्याप्त नहीं है क्योंकि इससे केवल हमारा सांसारिक जीवन ही व्यवस्थित होगा किंतु संघ में हमारी गति रुक जाएगी। संघ की साधना में तो हमारी गति तभी बनी रह सकेगी जब हम निरंतर आत्म विश्लेषण करते रहेंगे और सांसारिक कार्यों पर संघ को प्राथमिकता दे सकेंगे। जब भी कोई साधना की ओर बढ़ता है तो पारिवारिक और सांसारिक बाधाएं तो स्वाभाविक रूप से आती ही हैं। परिवार का विरोध भी स्वाभाविक है जो तभी कम हो सकता है जब हमारा परिवार भी संघमय हो जाए। जब से दंपति शिविरों का आयोजन होने लगा है तब से पारिवारिक बाधाएं कुछ कम हुई हैं। संघ की साधना में परिवार अथवा समाज को छोड़ने की बात नहीं है बल्कि पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों को निभाते हुए यह साधना करनी है। हमारी प्राथमिकता संघ है तो हमारे हर कार्य में संघ ही झलकेगा और हमारा हर निर्णय संघ के अनुरूप होगा। हमें अपनी हर गतिविधि को संघ की कसौटी पर कसना चाहिए और किसी भी भूल के लिए कभी भी स्वयं को क्षमा नहीं करना चाहिए। साधक यदि अपने आप को क्षमा करना प्रारंभ कर दें तो वह साधक ही नहीं रहेगा।

15 जुलाई को साप्ताहिक अर्थबोध शाखा में पूज्य श्री तन सिंह जी रचित सहगीत 'मत पूछो मुझे मेरे अंतर सखे' के अर्थबोध पर चर्चा करते हुए माननीय अजीत सिंह जी धोलेरा ने बताया कि पूज्य श्री तन सिंह जी द्वारा लिखित सहगीतों में इतिहास, आध्यात्मिकता, सामाजिक वेदना, प्रेरणा, विश्वास, संकल्प जैसे अनेक आयाम प्रकट होते हैं। आज जिस सहगीत पर हम चर्चा कर रहे हैं वह एक समर्पित साधक और कृपानिधान गुरु के बीच एक प्रेरक संवाद है। साधक पूज्य श्री को अपना अंतर सखा मानते हुए अपने मौन का स्पष्टीकरण देना भी अनावश्यक मानता है क्योंकि उसके लिए बोलने की अपेक्षा सुनना श्रेयष्कर हैं और यदि मौन का स्पष्टीकरण देने के लिए भी वह बोलने लगा तो उसका मार्गदर्शक बोलना बंद करके उसे सुनने लगेगा और इस गफलत में वह अपने मार्गदर्शक के अमृत वचनों से वंचित रह जायेगा। इसलिए साधक अपने लिए मौन का ही मार्ग चुनता है। संघ तन सिंह जी की पीड़ा का प्रकट स्वरूप है। वह पीड़ा परमेश्वर की कृपा को खींच लाती है, किंतु उस कृपा का लाभ जागृत साधक ही उठा सकता है। इसीलिए साधक चातक की भांति उस दुर्लभ अवसर को किसी भी प्रकार की गफलत में खोना नहीं चाहता। वहीं पूज्य श्री भी साधक को सावधान करते हुए कहते हैं कि यह मार्ग उन लोगों के लिए नहीं है जो विश्राम चाहते हैं अथवा छल कपट द्वारा कोई लाभ प्राप्त करना चाहते हैं। यह मार्ग तो मानवता की सेवा का मार्ग है जिसमें यह जीवन ही नहीं बल्कि अनेकों जीवन लगाने पड़ेंगे। यदि ऐसा करने का साहस हो तो ही इस मार्ग पर चलना। साथ ही पूज्य श्री साधक से अपना अंतर्सम्बन्ध स्पष्ट करते हुए यह भी कहते हैं कि वह चाह कर भी कहीं और जा नहीं सकता क्योंकि पूज्यश्री ने उसे अपना आंसू बना लिया है अर्थात अपनी पीड़ा उसके हृदय में भी जागृत कर दी है। संघ और स्वयंसेवक का संबंध एकांगी नहीं सर्वांगीण है और एक किसी निश्चित समय तक सीमित न होकर जन्म जन्मांतर तक के लिए है। यह गहरा संबंध इस सहगीत में पूज्य श्री ने स्पष्ट किया है।

इसी भांति 22 जुलाई की शाखा में पूज्य श्री रचित 'प्यास लगी हो' सहगीत पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि इस गीत में तन सिंह जी संघ के स्वयंसेवक को एक प्रेरक संदेश देते हुए कहते हैं कि यदि तुम्हारे मन में समाज के लिए कुछ करने की प्यास है तो उसके लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ ही श्रेष्ठतम मार्ग है। निश्चित रूप से तुमने इस प्यास से प्रेरित होकर अन्य मार्गों को भी आजमाया है और वहां असफलता भी पाई है किंतु उससे निराश होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि संघ ही उस प्यास को बुझाने वाला अमृत है। पूज्य श्री साधक को उसकी क्षमताओं का भान कराते हुए कहते हैं कि तू अपने भीतर देख! तेरे भीतर इस महान कौम का पूरा इतिहास, पूर्वजों की दिव्य परंपरा और तेरा स्वधर्म भरा पड़ा है। उन्हीं महान पूर्वजों का रक्त तेरे भीतर भी है। तू भी उसी परमात्मा का अंश है जो सृष्टि का सृजक, पोषक और नियामक है। किंतु संसार के प्रभाव में हम अपनी क्षमताओं को, अपने वास्तविक स्वरूप को, अपने स्वधर्म को भूल गए हैं, हमारी महान कौन की महान परंपरा को भूल गए हैं। इस भूल के कारण ही समाज आज पतन की स्थिति में है। इस स्थिति को देखकर पूज्य श्री तन सिंह जी के हृदय में जो पीड़ा उत्पन्न हुई, उसी पीड़ा का अभिव्यक्त रूप श्री क्षत्रिय युवक संघ है। इसीलिए तन सिंह जी साधक को भी उसी पीड़ा के प्याले पीने के लिए कहते हैं क्योंकि पीड़ा ही सृजन में सक्षम है। किसी भी प्रकार के सृजन के लिए पीड़ा का होना अत्यंत आवश्यक है। समाज के प्रति जो पीड़ा पूज्य तनसिंह जी की थी उसी पीड़ा को संघ अपने स्वयंसेवकों को दे रहा है। जो इस पीड़ा को समझ जाते हैं वही संघ को भी समझ पाते हैं और वही संघ के मार्ग पर चल पड़ते हैं। उनका संबंध संघ से उसी प्रकार का बन जाता है जैसा एक टहनी का वृक्ष से होता है और जो इस पीड़ा को ना समझ कर तर्क-बुद्धि से संघ के भावों को समझना चाहते हैं वे उन पंछियों की भांति ही होते हैं जो कुछ समय के लिए किसी वृक्ष पर बसेरा करते हैं और फिर नए बसेरे के लिए उड़ जाते हैं। हमें यह विश्लेषण कर लेना चाहिए कि हमारा संघ के साथ संबंध पंछी जैसा है अथवा टहनी जैसा। यदि हम संघ रूपी वृक्ष की टहनी अभी तक नहीं बन पाए हैं तो सावधान होकर आत्मचिंतन करें।

## जनकपाल सिंह को पितृशोक

संघ के नागौर संभाग के स्वयंसेवक जनकपाल सिंह ऊंचाइड़ा के पिताजी **श्री लक्ष्मणसिंह जी** का 16 जुलाई को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है एवं परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

श्री लक्ष्मणसिंह जी

# विरासत संरक्षण में संलग्न 'सेव अवर हेरिटेज फाउंडेशन'

इतिहास का अपना निजी विज्ञान होता है जो उसकी पुष्टि करता है। इस विज्ञान का सबसे बड़ा आधार पुरातात्विक धरोहर हैं। ग्रीस में इतिहास के अर्थ में 'हिस्तरी' शब्द का प्रयोग होता है जिसका शाब्दिक अर्थ है 'बुनना', अर्थात ज्ञात तथ्यों एवं घटनाओं को सुसम्बद्ध ढंग से बुनकर ऐसा चित्र उपस्थित करना जो सार्थक और तर्कसम्मत हो। इस प्रकार इतिहास शब्द का अर्थ है - परम्परा से प्राप्त उपाख्यान समूह (लोक कथाएँ),वीरगाथाएँ या ऐतिहासिक साक्ष्य। इतिहास के मुख्य आधार युगविशेष और घटनास्थल के वे अवशेष हैं जो किसी न किसी रूप में प्राप्त होते हैं। भारतवर्ष की प्राचीन विरासत ही इसे जीवंत और ऐतिहासिक चेतना से परिपूर्ण राष्ट्र का दर्जा देती हुई पूरी दुनिया में विलक्षण रूप प्रदान करती है। भारत के इतिहास, कला और संस्कृति की आधारशिला हमारे विरासत स्थल हैं। अपनी सभ्यता, संस्कृति और प्रगति की ऐतिहासिक जानकारी जीवंत रूप में भावी पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए विरासतों का संरक्षण आवश्यक हैं।

कहने को तो हमें अपनी संस्कृति और परम्परा पर बेहद गर्व है और हम दुनिया के सामने दावा करते नहीं थकते कि विश्व में संभवतः भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ हजारों वर्षों से बहती चली आ रही संस्कृति की पावन धारा आज भी उसके निवासियों के जीवन को अनुप्राणित करती है। लेकिन सच यह है कि हमें अपनी सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की कोई विशेष चिंता नहीं है। स्वाधीनता के समय हमारे देश में ऐतिहासिक महत्त्व की जितनी इमारतें थीं, आज उनकी संख्या में काफी कमी आ चुकी है। लोगों ने उनके ऊपर अवैध कब्जे कर लिए हैं, उन्हें तोड़कर नई इमारतें खड़ी कर दी हैं। भारत के मानचित्र पर राजस्थान प्रदेश राजनैतिक, भौगोलिक एवं प्राकृतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। यह वीरता, बलिदान, शौर्य एवं संस्कारों का प्रदेश है। यहाँ की समृद्ध विरासत का एक लम्बा गौरवशाली इतिहास रहा है। यहाँ के राजा - महाराजाओं, सामन्तों, सेठ-साहूकारों और प्रबुद्ध नागरिकों ने समय - समय पर जिन किलों, महलों, हवेलियों, छतरियों, देवलियों, झीलों, बावड़ियों, स्तम्भों, मंदिरों, स्मारकों आदि का निर्माण करवाया था वे स्थापत्य कला की दृष्टि से अद्भुत एवं बेजोड़ हैं। ये हमारी प्राचीन सभ्यता, संस्कृति, तकनीकी विकास एवं वैज्ञानिक उन्नति के साक्ष्य हैं। देश व प्रदेश में अनेक ऐसे ऐतिहासिक महत्त्व के स्थल हैं जिनकी स्थिति दयनीय है। शिल्प व स्थापत्य के ये प्राचीन अवशेष कहीं खेत - खलिहानों में तो कहीं वीरानों में कूड़े-करकट से अटे हुए जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पड़े हैं। उन्हें तुरंत संरक्षण की आवश्यकता है, यद्यपि दूसरे प्रदेशों की तरह राजस्थान में भी पर्यटन व पुरातत्व विभाग है जो विरासत संरक्षण का काम करता है फिर भी इस क्षेत्र में ओर अधिक सजगता और गतिशीलता की आवश्यकता है।

अकेले व्यक्ति के लिए तो यह अत्यंत दुष्कर है। ऐसे में 'सेव अवर हेरिटेज फाउंडेशन' नाम की संस्था इस अंधेरें में प्रदीप्त हो रही है जो हमारी ऐतिहासिक धरोहरों के प्रति न केवल चिंता करती है, बल्कि उनके संरक्षण के लिए सार्थक प्रयास भी कर रही है। संगठन की स्थापना से लेकर अब तक देश -प्रदेश की बहुमूल्य विरासतों के संरक्षण हेतु अनेक प्रयास किये गये हैं जिसमें स्मारकों की सुरक्षा एवं उनके रखरखाव के लिए आम जनमानस को प्रोत्साहित करना आदि भी शामिल हैं। संगठन के द्वारा सांस्कृतिक विरासतों का संरक्षण करने के लिए वे सभी उपाय किये जाते हैं जो उस संपति को यथासंभव उसकी मूल स्थिति के निकट रखने में प्रभावी साबित होते हो। संगठन विरासतों की देखभाल, जांच-परीक्षण, प्रलेखन (प्रदर्शन) आदि कार्य करने के साथ समय-समय पर विभिन्न विषयों को लेकर कार्यशालाएँ, व्याख्यान और प्रशिक्षण शिविरों का भी आयोजन करता है जिनमें राज्य व केन्द्रीय पुरातत्व विभाग के अधिकारियों एवं स्वतंत्र विशेषज्ञों को आमंत्रित किया जाता है। उनके माध्यम से संगठन के सदस्य पुरातत्व के संरक्षण की समुचित प्रणाली से अवगत होते हैं तथा इसकी बारिकियाँ समझने का प्रयास करते हैं।

इसके संस्थापक अरिहन्त सिंह चरड़ास कहते हैं कि 'हमारी विरासत के प्रति प्रेम प्रकट करने का एक तरीका यह है कि युवा पीढ़ी को हमारे गौरवशाली अतीत से परिचित कराना। इससे उनके मन में गर्व की भावना उत्पन्न होगी और वे परम्परा को जारी रखने के लिए प्रेरित होंगे साथ ही भावी पीढ़ी को भी प्रेरणा देंगे। इसके लिए संगठित रूप से प्रयास की आवश्कयता को समझते हुए हमने संगठन की स्थापना की।' संगठन देश के पुरातन स्थलों की खोज करने के साथ सर्वेक्षण, प्रचार-प्रसार एवं उनके संरक्षण का कार्य करता है। इसके अलावा उन स्थलों की मरम्मत का कार्य एवं रासायनिक उपचार भी करता है। इन सभी विरासतों से हमारा भावनात्मक सम्बन्ध है। इनमें से अधिकांश का निर्माण हमारे पुरखों ने करवाया है। महत्त्वपूर्ण विरासत स्थलों को चिह्नित करने के लिए संगठन के कार्यकर्ता प्रतिमाह विभिन्न जिलों में 'हेरिटेज वॉक' करते हैं। 'हेरिटेज वॉक' के तहत वे जिले के उन उपेक्षित पड़े विरासत स्थलों पर जाकर वहाँ मिलने वाले शिलालेखों को पढ़ने का प्रयास करते हैं। आस-पास रहने वाले लोगों से भी मिलते हैं और उस स्थान के बारे में जानकारियाँ जुटाकर उस स्थल का दस्तावेज बनाते हैं। फिर स्थानीय लोगों को उस स्थल के महत्त्व के बारे में जागरूक करते हैं। उस स्थल के बारे समाचार पत्रों में समाचार प्रकाशित करवाकर जनता व प्रशासन का ध्यान आकर्षित करते हैं ताकि लोग उनके संरक्षण के लिए प्रेरित हो सकें। इतिहास की पुस्तकों में सम्बंधित स्थल के विषय में उल्लेखित तथ्यों की भी खोज करते हैं। यह संगठन ऐतिहासिक अनुसंधानों और पुरातात्विक उत्खननों द्वारा हमारे विस्मृत इतिहास को सामने लाने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है, साथ ही देश की सांस्कृतिक संपदा के संरक्षण की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है। इस संगठन के साथ सम्बंधित विषय के दर्जनों विशेषज्ञ अपने अनुभव साझा कर रहे हैं। पुरातात्विक अनुसंधान परियोजनाओं के संचालन के लिए संगठन के पास प्रशिक्षित पुरातत्वविदों, पुरालेखविदों, वास्तुकारों, वैज्ञानिकों तथा पुरातत्व में रुचि रखने वाले लोगों का कार्यदल है जो हृदय की गहराइयों के साथ-साथ जीवंत चेतना की गगनचुम्बी भावनाओं के साथ धरोहरों के संरक्षण के लिए समर्पित भाव से काम करता है।

नागौर के चरड़ास गाँव के मूलनिवासी एवं वर्तमान में बून्दी शहर में विगत 3 दशकों से निवास कर रहे अरिहन्तसिंह शेखावत 'कमर्शियल पायलट लाइसेंस' (CPL) की अपनी पढ़ाई करने हेतु सन 2008 में फिलीपींस चले गये। नौकरी करने के दौरान वहाँ रहते हुए भारतीय विरासत से जुड़ी चीजों को देखकर उनके मन में अपनी विरासत के प्रति प्रेम पनपा और उसी प्रेम ने पीड़ा का रूप धारण किया। संगठन की स्थापना का भाव उत्पन्न होने का कारण था भारत की चुराई हुई ऐतिहासिक महत्त्व की अमूल्य संपदा की अंतर्राष्ट्रीय बाजार में तस्करी होते देखना। साथ ही उनके हृदय में था भारतीय समाज और सरकार द्वारा उपेक्षित विरासतों के प्रति पीड़ा का भाव। इसी पीड़ा के भाव ने कालांतर में 'सेव अवर हेरिटेज फाउंडेशन' के माध्यम से मूर्त रूप लिया। नौकरी छोड़कर भारत आने के बाद कुछ वर्षों तक संघर्ष किया लेकिन वे धरोहरों के संरक्षण को लेकर जो करना चाहते थे वह हो नहीं पा रहा था और जो हो रहा था उससे वे संतुष्ट नहीं थे। आखिर कुछ समय पश्चात अरिहन्तसिंह जी ने अपने बून्दी शहर से इस कार्य को सन 2018 में अपने मित्र व प्रमुख सहयोगी हेमेंद्र प्रताप सिंह आमलदा के साथ मिलकर बहुत ही नगण्य संसाधनों से प्रारम्भ कर दिया।

बकौल अरिहन्तसिंह चरड़ास 'हमारी कहानी प्रारम्भ होती है बून्दी शहर में स्थित ऐतिहासिक सूरज छतरी से। जब मैंने पहली बार सूरज छतरी की मूर्ति को देखा तो मन में अपार पीड़ा हुई कि इतनी भव्य व सुंदर मूर्ति हमारी उपेक्षा के कारण समाजकंटकों द्वारा खण्डित कर दी गई। चिंतन करने पर मन में विचार आया कि इस परिस्थिति में विरासत के प्रति मेरा क्या दायित्व बनता है ? मैं साथ में दो बोतल पानी की लेकर गया था एक से मूर्ति को साफ करके घर आ गया। अगले दिन अपने कुछ मित्रों को साथ लेकर छतरी की साफ-सफाई की, फिर कुछ समय के बाद उसकी मरम्मत की। इस तरह विरासत संरक्षण का ये अभियान प्रारम्भ हो गया और न केवल बून्दी से बल्कि प्रदेश के अन्य क्षेत्रों से भी विरासत प्रेमियों का साथ मिलने लगा।' अरिहन्तसिंह जी के हृदय से पीड़ा उपजी और उस पीड़ा को कई लोगों ने अपने कलेजे से लगाया जिसके कारण दो लोगों की बुनियाद से शुरू हुई यह पहल आज बून्दी जिले से बाहर दो दर्जन से अधिक जिलों में विस्तार पा चुकी है और बड़ी तेजी से सम्पूर्ण राजस्थान में भी विस्तार पाती जा रही है।

संगठन की उपलब्धि के रूप में सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है बून्दी शहर की ऐतिहासिक महत्व की सूरज छतरी का संरक्षण व जीर्णोद्धार इसके अलावा बून्दी जिले में निमार्णाधीन गरडदा बांध के जलभराव क्षेत्र में आने वाले 2 हजार से 20 हजार वर्ष पुराने शैलचित्रों की 8 साइटों के संरक्षण के लिए केन्द्र सरकार का ध्यान आकर्षित किया व इनको बचाने को लेकर लंबी लड़ाई संगठन अब भी लड़ रहा है। आधुनिक सुविधाओं को जुटाने के लिए खनन की बलि चढ़ रहे दर्जनों स्मारकों का संरक्षण, सैकड़ों छतरियों का जीर्णोद्धार, सैकड़ो शिलालेखों का अनुवाद कर उनका दस्तावेजीकरण, बून्दी के जंगल में स्थित लगभग 1800 वर्ष पुराने गुप्तकालीन एकमुखी शिवलिंग को प्रकाश में लाने के बाद 'भारतीय पुरातत्व सर्वे से उसका संरक्षण करवाने जैसे दर्जनों कार्य संगठन ने अपने स्थापना काल से लेकर अब तक किये हैं। यह संगठन पुरावशेष तथा बहुमूल्य कलाकृतियों को खोजने का प्रयास कर देशवासियो में अपनी विरासतों के प्रति जागरूकता पैदा करने के साथ उनके संरक्षण के लिए कर्त्तव्य बोध जगाता है।

संगठन अपनी भविष्य की योजनाओं के तहत पुरातत्व के विभिन्न पहलुओं पर शोध करने को लेकर अध्ययन संस्थान की स्थापना करना चाहता है। जिसमें देश-प्रदेश के सभी शिलालेखों, स्मारकों व छतरियों का स्कैन दस्तावेज तैयार करने की महती योजना है। शिलालेखों का अनुवाद करके उन्हें इतिहासकारों को उपलब्ध करवाना ताकि वे इतिहास की टूटी कड़ियों को इन प्रामाणिक स्रोतों के माध्यम से जोड़ सकें और गाँवो में बिखरे पड़े इन जीवंत दस्तावेजों के आधार पर इतिहास लिखने में सहायता मिल सके। ये अध्ययन संस्थान पुरातत्व के क्षेत्र में शोध कर रहे देश-विदेश के शोधकताओं को प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध करवाने को लेकर कृतसंकल्प होगा ऐसी संगठन की चाह है। संगठन देश-प्रदेश में उपेक्षित पड़ी विरासतों से जुड़े इतिहास पर वृत्तचित्र (डॉक्यूमेंट्री फिल्म ) बनाने की योजना पर भी कार्य कर रहा है ताकि इतिहास की विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में जनमानस को पता चले और इससे उनमें इतिहास के प्रति गौरव की भावना पैदा हो, जिसकी भावना विगत एक सदी से भारतवासियों में कम होती जा रही है और वे लगातार अपने इतिहास को लेकर हीनता के बोध से ग्रसित होते जा रहे हैं।

**- वीर बहादुर सिंह असाडा**

# हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्रीमती बीनू देवल

राजस्थान प्रशासनिक सेवा 2018
के हाल ही में घोषित परिणामों में

## श्रीमती बीनू देवल

पुत्री श्री गजेन्द्रसिंह गांव-करड़ा
को रैंक 8वीं एवं

## श्री पुष्पेन्द्र सिंह देवल

पुत्र श्री मुकन सिंह गांव-डोरड़ा को
रैंक 501वीं प्राप्त कर पूरे क्षेत्र एवं
समाज का नाम रोशन करने पर

पुष्पेन्द्र सिंह देवल

हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

**शुभेच्छुः**

अनोप सिंह पुत्र दुर्जनसिंह जी करड़ा (हाल-मुंबई)

सुरेंद्र सिंह पुत्र स्व. खंगार सिंह जी करड़ा (हाल-मुंबई)

गणपत सिंह पुत्र उक सिंह जी करड़ा (कृषि फॉर्म ढोरडी)

केर सिंह पुत्र लाख सिंह जी करड़ा, (हाल-मैसूर)

नरेंद्र सिंह पुत्र दुर्जनसिंह जी करड़ा (हाल-हैदराबाद)

कुं.गोपाल सिंह पुत्र ठा.छैल सिंह जी करड़ा

झूठ सिंह पुत्र वाघ सिंह जी करड़ा (हाल हैदराबाद)

सुमेर सिंह पुत्र गणपत सिंह जी करड़ा (हाल मुंबई)

भरत सिंह पुत्र नूर सिंह जी करड़ा (हाल सूरत)

जनक सिंह पुत्र चंदन सिंह जी करड़ा

भगवत सिंह पुत्र नटवर सिंह जी करड़ा (हाल-सूरत)

एवं समस्त देवल परिवार करड़ा

व

श्री क्षत्रिय युवक संघ शाखा - करड़ा, जिला जालोर

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाषः 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org